

भगवान महावीर : एक जीवन दृष्टि

डॉ. सुमन जैन

डॉ. श्याम लाल

आचार्य, संस्कृत विभाग

चौ. बल्लूराम गोदारा राजकीय

कन्या महाविद्यालय, श्रीगंगानगर (राज.)

शोध सार ; ऐजतंबजद्ध —

जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर का जीवन दर्शन मानव कल्याण और मानवता तथा जीवनमूल्यों से परिपूर्ण है। अहिंसा को शीर्ष पर रखते हुए उन्होंने कहा कि सभी जीवों के प्रति करुणा और दया के भाव सदैव मानव मस्तिष्क में रहें। इसी तरह भगवान महावीर के जीवन सिद्धान्तों में जीवन जीने के लिए विविध दृष्टिकोण व सिद्धान्त बताए हैं। जीवन जीने की प्रेरणा के निमित्त, अपरिग्रह, तपस्या और आत्मसंयम, शान्ति, सहिष्णुता और नैतिक मूल्यों पर बल दिया है।

मानवता के हित में भगवान महावीरने एक महत्त्वपूर्ण सन्देश “जियो और जीने दो” दिया है। अगर इसे मानव समझ ले तो जीवन सुखमय और कल्याणमय बन सकता है। उन्होंने जियो को पहले रखा है क्योंकि शान्ति, सौहार्द, सहयोग, स्नेह, चरित्रवान जीवन जीकर ही तो प्राणीमात्र के जीने के लिए अनुकूल वातावरण बनाया जा सकता है।

शब्द कुञ्जी ; जमलूवतकेद्ध —

मुदिता, समता, साधना, सिंहासन, स्वार्थसिद्धि, तीर्थंकर, निस्पृह, जितेन्द्रिय, आनन्दमय, अतृप्ति, सहिष्णुता, श्रमणोपासना, शूलपाणि, उद्धारक, दयनीयता, संकल्प, जाग्रत, अभूतपूर्व।

कुमार वर्धमान से महावीर बनने की यात्रा मैत्री, मुदिता, प्रेम, करुणा, समता की है। ‘अप्पा परमप्पा’ आत्मा से परमात्मा बना जा सकता है — उच्च साधना एवं प्रबल पुरुषार्थ के द्वारा और भगवान् महावीर का जीवन एवं उनके सन्देश यही बताते हैं।¹ नयसार से भगवान्

¹ उत्तराध्ययन सूत्र, तृतीय अध्ययन — चतुरंगीय

महावीर बनने में कुमार वर्धमान को 27 जन्म लगे।¹ जीवन को सत्य, संघर्ष, समता, तप की अग्नि में तपाकर महावीर मानवता के शीश पर कुन्दन बनकर चमके हैं।

महावीर के चरणों में हृदय श्रद्धा से झुक जाता है। वे हृदय सिंहासन पर आराध्य बन विराजते हैं तो अपने प्राणीमात्र के लिए कल्याणकारी विचार दर्शन के कारण।² समता, धीरता, करुणा, प्रेम, अहिंसामय जीवन जीकर 'जियो और जीने दो' का सन्देश दिया।

भगवान् महावीर ने 'जियो' को पहले रखा क्योंकि आप शान्ति, सौहार्द, सहयोग पूर्ण, प्रेममय स्वस्थ, चरित्रवान जीवन जीकर ही तो प्राणीमात्र के जीने के लिए अनुकूल वातावरण बना सकते हैं। अन्य पाणी के प्रति हृदय में समता, प्रेम, मैत्री, करुणा के भाव रखेंगे तभी तो उन्हें जीने के लिए समुचित साधन दे पाएंगे। व्यक्ति अपने उत्कर्ष के लिए ईर्ष्या, द्वेष, वैर, अस्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना नहीं रखने पर ही तो मन संतुलित हो पायेगा। अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए हिंसा का आश्रय नहीं लेने पर 'जीने दो' का स्वर सशक्त हो पायेगा।³

धर्मतीर्थङ्कर महावीर उन श्रेष्ठ गुणों के समवाय हैं, जो हर युग में प्रत्येक मानव में होने चाहिए। 'जियो ओर जीने दो' का उपदेश देने वाले महावीर के चरित्र में समाहित उन श्रेष्ठ गुणों का क्रमवार विवरण प्रस्तुत है, जिनके कारण वे हर युग में प्रासंगिक है। अपने आचरण, व्यवहार, में उन आदर्शों को जीया और इस प्रकार जीया कि दूसरों को भी स्वतन्त्र रूप से जीने का अधिकार मिला। उनकी समता, सहिष्णुता, तितिक्षा की पराकाष्ठा है, जब वे दंश देने वाले सर्प, बिच्छुओं को हानि नहीं पहुँचाते। भगवान् महावीर के जीवन के परिप्रेक्ष्य में उन स्पृहणीय गुणों का विवरण निम्नलिखित है –

1. निस्पृह त्यागी – कुमार वर्धमान सर्वाङ्ग सुन्दर, अद्भुत, आकर्षक, अपार ऐश्वर्य के स्वामी हैं, पर मन वैरागी, शान्त, जितेन्द्रिय, निस्पृह है। कुमार ने अतुलित बल वैभव, राजपाट सुख-सुविधाओं को तिनके के समान छोड़ दिया।⁴ धन, प्रभुत्व, शक्ति,

¹ आगम के अनमोल रत्न – मुनि हस्तीमल 'मेवाही' तीर्थङ्कर चरित्र, पृ.सं. 191

² तुमही सब विघ्न विनाशन हो। तुमही निज आनन्दभासन हो।

हमको तुमरी शरणागत है। तुमरे गुन में मन पागत है। श्री जिनवाणी पृ.सं. 93

³ भगवान् महावीर की बोधकथाएँ – दिवाकर प्रकाशन।

⁴ जल में भिन्न कमल ज्यों रहिये, घर में बालयती।

युवावस्था – कोई एक भी हो तो अहंकार, अनिष्ट को जन्म दे सकता है और जहाँ चारों का सम्मिश्रण हो तो वहाँ तो कहना ही क्या?¹ परन्तु महावीर तो मुक्तिपथ के पथिक हैं। वे स्वयं तो त्याग, साधना और संयम के मार्ग पर चलकर मुक्त हुए ही और अपन जीवनदर्शन उपदेशों² के द्वारा सभी के लिए मुक्तिमार्ग को प्रशस्त कर गये।³

शान्तिपूर्ण, आनन्दमय जीवन जीने का मार्ग त्यागवृत्ति में ही है। भगवान् महावीर ने कहा, “जैसे ईधन से अग्नि की और हजारों नदियों से लवण समुद्र की तृप्ति नहीं होती, वैसे ही तीन लोक की सम्पत्ति प्राप्त हो जाने पर भी जीव की तृप्ति नहीं होती।⁴ लाभ से लोभ बढ़ता है। दो माशे सोने से पूरा होने वाला कार्य करोड़ से भी पूरा नहीं हुआ।⁵ अतृप्ति एवं लालसा में प्राणी अन्य प्राणियों की पीड़ा, वेदना, कष्ट देने का कारण बनता है और स्वयं भी कष्ट पाता है।⁶ इसलिए महावीर भगवान् ने त्यागी बन त्यागवृत्ति का उपदेश दिया। स्वयं मुदित, प्रसन्न, खुशहाल जियो और अन्यो को भी जीने का अवसर दो। यथा – सीलं मोक्खस्स सोवाणं।⁷ शील संयम के द्वारा अपने सुख के सापेक्ष अन्य का अधिकार मानने में ही सच्चा सुख है।

यथा द्रष्टव्य –

शान्ति नहीं तब तक जब तक सुख-भाग न नर का सम हो।
नहीं किसी को बहुत अधिक हो नहीं किसी को कम हो।⁸

राजपाट ऐश्वर्य छाँड़ सब, ममता मोह हती। जिनवाणी, पृ.सं. 438

¹ वाणभट्ट- शुकनासोपदेश।

² भगवान् ने कहा – आचार्य महाश्रमण

श्रमण महावीर – आचार्य महाप्रज्ञ।

³ सुणेह मेगगमणा मगं बुद्धेहि देसियं।

जमायरन्तो भिक्खू दुक्खाणन्तकरो भवे।।

तहेव हिंसं अलियं चोज्जं अबभसेवणं।

इच्छाकामं च लोभं च संजओ परिवज्जम्।। उत्तराध्ययन सूत्र – पणतीसइमं अज्झयणं – अणगारमग्गई, पृ.सं. 625

⁴ जहं इंधणेहिं अग्गी लवणसमुददो णदीसस्सेहिं।

तह जीवस्य य तित्ती नत्थि तिलोगे विलद्धम्मि। भ.आ. 1143

⁵ जहा लाहो तहा लोहो, लाहा लोहो पवड्ढई। दो मासकयं कज्जं, कोडीए वि न निट्ठियं।। उ0 8/10

⁶ पुढ्ढीसालीजवा चेव, हिरण्णपसुभिस्सह। पडिपुण्णं नालमेगस्स, इह विज्जा तवं चरे।। उत्तराध्ययन 9/49

⁷ शीलपाहुड 20

⁸ रामधारी सिंह दिनकर, “कुरुक्षेत्र” काव्य संग्रह

2. सच्चे श्रमण : समता, मैत्री, अभय, सहिष्णुता के पर्याय

भगवान् महावीर ने कहा, मुझे दुःख प्रिय नहीं, वैसे ही सब जीवों को दुःख प्रिय नहीं है। यह जानकर जो किसी का वध नहीं करता और नहीं करवाता, सबके प्रति सम रहता है, वही श्रमण है।¹

शीत, उष्ण, परीषह बाहरी द्वन्द्व एवं मानसिक द्वन्द्व में निर्विकार, शान्त सम बने रहकर प्राणी—प्राणी में कोई भेद नहीं करके भगवान् महावीर ने अपने शासन में सभी को जीने का समान अधिकार दिया।² उनके ग्यारह गणधर ब्राह्मण थे। श्रेणिक राजा अनेक राजपुत्र, क्षत्रिय। धन्ना, शालिभद्र, अनाथी, वैश्य, अर्जुनमाली जैसे शूद्र जाति, वर्ग, सम्प्रदाय से मुक्त श्रमणोपासना में रत थे। सभी को आत्म कल्याण करने एवं जीने का अधिकार है। उन्होंने कहा, समस्त प्राणियों के प्रति मेरे मन में समत्व का भाव है। सभी के प्रति करुणा, मैत्री, मुदिता है। यथा द्रष्टव्य —

सम्मं मे सब्बभूदेसु, वेरं मज्झं ण केणवि।³

भगवान् महावीर ने तो बैलों की चोरी की आशंका में स्वयं को पीटने वाले ग्वाले को, कानों में कीलें ठोक देने वाले निर्मम हृदयहीन ग्वाले को, शूलपाणि यक्ष को⁴ एक ही रात्रि में बीस मरणान्तिक कष्ट देने वाले संगमदेव को भी क्षमाकर जीने का अधिकार दिया। यह उनकी समता, तितिक्षा की पराकाष्ठा थी।

“परस्परपग्रहो जीवानाम्” अर्थात् सभी प्राणियों के प्रति दया, उपकार के भाव रखो।

भगवान् महावीर ने आत्मवत् सभी प्राणियों को समझा। जैसे मुझे स्वतन्त्रतापूर्वक, आनन्दमय जीना है, वैसे ही सभी को जीना है। यथा द्रष्टव्य है —

जीववहो अप्पवहो जीवदया होदि अप्पणो हुदया।

¹ जह मम न पियं दुक्खं, जाणिय एमेव सब्बजीवाणं।

न हणइ न हणावइ य, सममणती तेण सो समणो।। अनु. 708 गाथा 3 भगवान् महावीर — आचार्य तुलसी, पृ. 111
एयं खु णाणिणो सारं जं ण हिंसइ कंचणं। अहिंसा समय चेव, एयावंतं वियाणिया।। (सूत्रकृतांग 1/1/4/10)

² श्रमण महावीर आचार्य महाप्रज्ञ, पृ.सं. 185 समता के तीन आयाम — आवश्यक चूर्णि, उत्तरभाग, पृ.सं. 168

³ भगवान् महावीर — आचार्य तुलसी मूला. 2/42

⁴ घोर उपद्रवी जन्थो विनम्र आराधक — श्री महावीर जीवन दर्शन, पृ.सं. 17,18,19

विसंकटओव्व हिंसा, परिहरिदव्वा तदो होदि।¹

अर्थात् किसी भी प्राणी का वध अपनी आत्मा का ही वध है। किसी भी प्राणी की दया अपनी आत्मा की दया है।

उन्होंने कहा, सभी जीवों, भूतों, प्राणियों, सत्त्वों को जीने दो। यथा द्रष्टव्य –

सव्वे पाणा, सव्वे भूया, सव्वे जीवा, सव्वे सत्ता
णं हंतव्वा, ण अज्जावेयव्वा।²

3. उद्धारक –

भगवान् महावीर की साधना का बारहवां वर्ष। नारी जाति की दयनीयता और दास्यकर्म – दोनों का चित्र उनके मानस में उभर आया। उनके कोमल चित्त में नारी जाति के उद्धार एवं समाज से दास प्रथा के कलंक को मिटा देने का संकल्प जाग्रत हो गया। उन्होंने संकल्प लिया, 'मैं दासी बनी हुई राजकुमारी के हाथ से ही भिक्षा लूँगा, जिसका सिर मुंडा हुआ हो, हाथ-पैर में बेड़िया हों, तीन दिन की भूखी है और आँखों में आँसू है, जो दहलीज के मध्य में खड़ी है और जिसके सामने शूर्प के कोने में उबले हुए थोड़े से उड़द पड़े हैं।³ राजकन्या होते हुए भी जो दासी के रूप में बाजार में बिक गई। कैसी भयावह व्यवस्था है? ऐसे कठोर यन्त्रणामय जीवन से चन्दनबाला को मुक्त करवाने के लिए भगवान् महावीर छह महीने छब्बीस दिन तक कौशाम्बी नगरी में निराहार घूमते रहे। छब्बीसवें दिन भगवान् धनावह श्रेष्ठी के यहाँ पहुँचे, जहाँ चंदना बेड़ियों में झकड़ी, तीन दिन से भूखी दहलीज पर खड़ी है। भगवान् महावीर को देखकर चंदना भाव विह्वल प्रसन्न हो गई। चंदना की आँख में आँसू नहीं। भगवान् मुड़े चंदना की आँखों में आँसू छलछला आये और करुण स्वर में बोली, भगवन्! मेरा विश्वास था, तुम नारी जाति के उद्धारक हो, दास-प्रथा के निवारक हो।⁴ महावीर की करुणा छलकी, चंदना के हाथ से तीन दिन के बासी उबले हुए उड़द के बाकुले से 6 महीने 26 दिन के उपवास का पारणा

¹ भ.आ. 797, भगवान महावीर – आचार्य श्री तुलसी

² आचाराग 4/23

³ आवश्यक चूर्णि – पूर्व भाग, पृ.सं. 316, 317

⁴ श्रमण महावीर – आचार्य महाप्रज्ञ, पृ.सं. 86

किया। देवदुन्दभी बजने लगी, आसमान से रत्नवृष्टि, पुष्पवृष्टि होने लगी। चारों ओर अहोदान! महादान! की ध्वनि गुंजायमान होने लगी। चन्दना दिव्य रत्नाभूषणों से सुसज्जित हो देवाङ्गनाओं को भी तिरस्कृत कर दे ऐसे मनोहारी स्वरूप में शोभायमान हुई।

सभी ने समाज में व्याप्त दास प्रथा की भर्त्सना की जहाँ पर एक राजकन्या दासी बनने पर विवश हो गई। राजसी जीवन को ठुकरा, चन्दना ने अपने उद्धारक महावीर से प्रार्थना की कि मुझे भी आत्मकल्याण का अधिकार मिले। मुझे अपने संघ में दीक्षित कर लो। नारी जाति के मुक्ति के प्रबल समर्थक महावीर ने चन्दन बाला को साध्वी प्रमुख बनाकर, नारी जाति के उत्थान में अभूतपूर्व कार्य कर नारियों को भी जीने का, मुक्ति पाने का अधिकार है – का उद्घोष किया।

भगवान् महावीर ने भयंकर विषधर चंड कौशिक को प्रतिबोध देकर उसे भी क्रोधरहित, प्रेममय जीवन जीने को प्रेरित कर उसका उद्धार किया।¹

भगवान् महावीर की करुणा तो पशु, पक्षी, कीट, पतंगों सब पर छलकी। एक बार भगवान् विहार कर रहे थे। सामने खेत में गरीब किसान दुर्बल बैलों को बुरी तरह से पीट रहा था। भगवान् ने गौतम गणधर से कहा कि गौतम किसान को प्रतिबोधित करो कि वह ऐसा बुरा कर्म करके स्वयं का अकल्याण और बैलों को पीड़ित न करे और किसान प्रदत्त पीड़ा से बैलों को मुक्त करवाकर उन्हें जीने दिया।²

निष्कर्ष –

साम्ययोगी, धैर्य सिन्धु, करुणालय भगवान् महावीर ने संसार जाल में छटपटाते, अपने ही कर्मों के विपाक स्वरूप प्राणियों को दुःख पाते देखा तो अमृतमयी देशना से उन्हें मुक्त करवाने का प्रयास किया। अपार ऐश्वर्य, देवोपम सौन्दर्य, राजपाट से भी जीवन में महत्वपूर्ण आत्मकल्याण है। जीव का स्वरूप शान्ति, आनन्द पाना है और यह समता, वीतरागता से ही सम्भव है। भगवान् महावीर ने आत्मसाधना के द्वारा कैवल्य को पाया और लोककल्याण हेतु

¹ विष सारे करुणानिधि, थापे शांति अपार – श्रीमहावीर जीवन दर्शन, पृ.सं. 80

² अमृतपुरुष गौतम – दिवाकर प्रकाशन, पृ.सं. 21

धर्मतीर्थ का प्रवर्तन कर, तीर्थङ्कर अरिहरन्त पद को पाया और धर्म देशना देकर जनकल्याण किया। राग-द्वेष की शृंखला में झकड़े जनसमुदाय को समझाया कि समता ही जीवन का शृंगार है। अपने भावों को निर्मलतम बनाने पर ही वीतरागता की स्थिति को पाया जा सकता है।

‘रागी नही नही तू द्वेषी, वीतरागी हितोपदेशी।’

भगवान् महावीर स्वयं सिद्ध, बुद्ध, मुक्त बने और अपने अनुयायियों को भी यही सन्देश दिया – ‘जियो और जीने दो’।

सम्यक्त्व की राह दिखाने वाले, अपने ही पुरुषार्थ द्वारा ‘अप्पा परमप्पा’ बन जाने की प्रेरणा देने वाले भगवान् महावीर से यही प्रार्थना भक्तजन करते हैं कि आपका निर्मल, सिद्धस्वरूप हृदय में विराजमान रहे और हम भी आप ही के समान हो जाएं।

यथादृष्टव्य –

प्रभु मोहिय आप सदा बसियें जबलो वसुकर्म नहीं नसिये।
जब लो नहिं नाशकरो अरि को, शिव नारि वरों समता धरि को।
यह द्यो तबलो हमको जिनजी। हम जाचतु है इतनी सुनजी।²

¹ श्री जिनवाणी

² श्री जिनवाणी – श्री महावीर जिनपूजा, पृ.सं. 89